अङ्गादर्श ।

जिसमें

स्वजनसुखदानी श्रीराधा महारानी व सच्चिदानन्द श्रीकृष्णचन्द्र महाराज की नखशिखपर्यन्त शोभा दोहा कवित्त व सवैया छन्दों में बरणित है ।



जिसे

श्रीमद्राधामाधवचरणकमलमधुकर

सिद्ध श्रीमहाराजकुमारहरिहरपुराधीश सदा समर-विजयोत्सृष्टवंशावतंस श्रीमद्बाबूविश्वेश्वरवक्सपाल वर्म्मात्मज बाबूरंगनारायणपाल ने रचा ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १८९३ ई० ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ।)

अथ अङ्गादर्श प्रारम्भः

श्रीराधाकृष्णाय नमः ।



श्रीगणेशाय नमः ।

दोहा ।

अभिमत फलदायक परम मङ्गलकरन स्वछन्द ।
बंदौं युगलकिशोर-पद अनुपम आनँदकन्द ॥१॥

घनाक्षर ।

सूर्य्यवरवंश मै श्री ईश्वरीप्रसाद पाल भये हरिभक्त पाले प्रजनि सुत समान । तिनके तनय श्री विश्वेश्वरबक्स पाल क्षात्रधर्म-निष्ठ शास्त्र-ज्ञाता बुद्धि के निधान ॥ रङ्गपाल नाम मति-

मन्द तिनको हौं सुत श्रीहरिचरण आस आनत कछू न आन। देश सरवार हरिहरपूर ग्रामवास अवधपुरी ते ऋषि योजन दिशा ईशान ॥ २ ॥

दोहा।

ऋषिरुवेदनिधि सुधाधर विक्रमाब्द सु बखानि।
भाद्र कृष्ण तिथि नाग बुध ग्रन्थ जन्मदिन जानि॥
राधा माधव सुअँग की आभा परत निहारि ।
नाम धर्‌यो या ग्रन्थ को अङ्गादर्श बिचारि ॥४॥
उक्ति युक्तिवर रचन को यद्यपि नाहिँ विवेक।
तिमि तिमि श्रीहरि गाइये यह धार्‌यो मन टेक॥
यद्दपि न कछु रचनाललित श्रीहरिविषयकचाहि
कविजन बुधजन सरलहिय तऊ आदरैं ताहि ॥
यहै भरोसा आनि उर प्रगटत हौं यह ग्रन्थ ।
श्रीहरिपद उरधारि कै लखि सुकविन कर पन्थ॥

अथ श्रीराधानखशिख। चरण वरणन कवित्त।

किसलय ब्हरिजात पारिजात हारि जात सुमन सिरीषकोमलाई के हरण हैं। रंगपाल अमल अनूपम अरुण आछे प्रात अर्क जपा जीते

डूंगुर बरण हैं ॥ राजै शुभ रेख वज्र-अंकुश पताका आदि साका तिहुंलोक असरण के सरण हैं। विघ्न के हरण चारि फल के करण मुद मंगलकरण राधे रावरे चरण हैं ॥ ८ ॥

सवैया।

सुन्दरता के सरोवर के दल बारिज कीधौं भले छवि छाय हैं। पल्लव कीधौं सुर-द्रुम के बिलसै अति चीकने से मन भाय हैं ॥ रंगजूपालैं भने बरसीव किधौं अति कोमलता को सुहाय हैं। नीकी थली किमलाई कि राजित ये किधौं कीरतिजा के सुपाय हैं ॥ ९ ॥

दान प्रसन्न दिये जल मैं यक पाय खरे बहु काल बिताये। आतप बात औ सीत की भीत सही सवितातप मै चित लाये ॥ रंगजूपाल सुबास सुवर्ण लहे पुनि ब्रह्म-पिता कहवाये। है वृषभानुलली पर पङ्कज तो पद की पदवी नहिँ पाये ॥ १० ॥

कवित्त ।

अभिमतदायक प्रसिद्ध सिद्धि सिद्धिन के सिद्धि कैं समृद्धि ऋद्धि बुद्धि के अगार हैं। चतुर्मुख षष्मुख सुमुख हजार निति गुण गण गावत तऊ पावत न पार हैं ॥ सुरुचि सराग शुभ रेखन बलित रूरे पूरे परमहपरमै मृदुता कि सार हैं । रंगपाल राधे जू के भूषण-सहित पाय हम से गरीब निराधार के अधार हैं ॥ ११ ॥

हारे हैं नखन हेरि नखत समूह हिय-जीवन की मूरि विधि आँगुरी सँवारे हैं । वारे हैं जलज जपा जावक समेत लीने कोमल सिरीष सुमनो ते निरधारे हैं ॥ धारे हैं सुमन गंगधर आदि रंगपाल भूषणबलित चिह्न सुभग कतारे हैं । तारे हैं बेचारे दीन अधम अपारे धन जीवन हमारे राधे चरण तिहारे हैं ॥ १२ ॥

अथ नखांगुली बिछिया वर्णन – सवैया ।

आँगुरी रागमई पग की बिलसैं वर जीवन मूरि सी हेरे । यों नखआधर चारु लसै मन-

रत्नन तारे लगैं जनु चेरे ॥ राजैं पनौट जुते बिछिया तेहि की धरी यों उपमा मन मेरे । रंग जू पाल किरीट मनो पग आनि परे हैं दि-गीशनि केरे ॥ १३ ॥

जावक बर्णन—सवैया ।

धौंको मनोभव के रमणी कौ जु चित्त कौ भौन किधौं मन मोहै । प्रीतम के मन को अ-नुराग कि रंग जू पाल रसाल लगो है ॥ जोवन ज्योति किधौं रमणीय कि शोभा के धाम को आँगन सोहै । जावक कैधौं सुपायन री को ति-यानि को आनि सुहाग परो है ॥ १४ ॥

नूपुर बर्णन—सवैया ।

गायक हैं गुण गूढ़नि के किधौं श्रौननि दा-यक मोद अपार के । रंगजू पाल किधौं गति हार हैं कै प्रतिहार हैं मार के बार के ॥ मा-यक मै कै कि बाजे बिजै के सु ऐं किधौं पाइहू नीके बिहार के । काञ्चन के मणि नील जड़े किधौं नूपुर हैं पग दू परदार के ॥ १५ ॥

पगभूषण वर्णन—सवैया।

बाँक अनौट जुतै बिछिया को बिलोकि सुभा हरिचित्त लुभानो। रंग जू पाल यों नूपुर की धुनि गायक चाय करै गुणगानो। पाय जराय को जेहर राजित यों छबिता कवितै उर आनो। हंस-करी-गतिं जीती सुतो गति बाँधी सोई जयकङ्कण मानो॥ १६॥

चरण तथा चाल वर्णन—सवैया।

वारिज पायन की समता न लही जल भानु व्रतै सुठये हैं। एड़िन को लखि नारँगी के उर अन्तर त्यों बहु फाँक भये हैं॥ रंग जू पाल महाउर देखि महा उर प्रीतम मोद छये हैं। हंस करी कुल गौन बिलोकि सुपुष्कर कानन वासं लये हैं॥ १७॥

गति वर्णन—सवैया।

वेग लखौ चलि नन्दलला तुव पुण्य उदै जु भई बहु काल की। कीरतिजा बिहरैं हैं सुबाग मै देखत शोभा नई तरु जाल की॥ सीस

अधो करी है करी के कुल वारने हैं अवलोकु मराल की । लोक तिहूं महँ ना उपमा बलि रंगजूपाल हरे हरे चाल की ॥ १८ ॥

जंघ वर्णन—सवैया ।

तुव ऊरुनि की भनै रङ्गजूपाल कहा उपमा न विचारन हैं । कदली कँपै पावन पातन हेरि किये जटा शीरषधारन हैं ॥ अरु बौरे मदै तजि सुण्ड लपेटि कबौं पटकैं कै पुकारन हैं । मुनि बापुरे दन्तनि काढ़े फिरैं दरबारन बारन बारन हैं ॥ १९ ॥

दोहा ।

कदली बदली बेष लखि अदली जंघा साज ।
करत कुण्डली सुण्ड को लाजनि तें गजराज ॥

कटि वर्णन—सवैया ।

भागीरथी अरु भानुजा बीच जथा कहि भारती ज्यों बितरङ्ग हैं । धीरा को हाँस जथा मुख दास को ज्यों प्रथमी शुकला को मयङ्क हैं ॥ ज्यों अनुमान ते ब्रह्म प्रमानिये जा विधि को रच

रंग को शक्ल है । तानु जथा महासूम को ता विधि रंगजूपाल भने तिय खड्ग हैं ॥ २१ ॥

कटिकिंकिणी वर्णन — सवैया ।

लोचभरी करतार करी कटि खीन खरी नहि होति लखाई । आपुहि छीन विचारि हिये धरि लाज कहूं दुरिंगे मृगराई ॥ मञ्जु यों कञ्चन किङ्किणी की धुनि श्रौननि रंग जू पाल सोहाई । विश्वविजै करिबो चितचाहि को मानहु दुन्दुभी मैन बजाई ॥ २२ ॥

उदर वर्णन कवित्त ॥

अमल कमल ते नरम मखमल ते परम रुचि धर हिय मोद छहरात है । रंगपाल भनै दीठ परत रपेट खात जब नेक नीलपट छोर फहरात है ॥ सुखमा सहिट रावरे को पेट कान्ह मन लेत है लपेट उपमा न ठहरात है । पान सरमाने वे छपाने पियराने तज चलदलदल देखि देखि थहरात है ॥ २३ ॥

दोहा ।

परी चलदलहि चल दलो दली पान को मान।
उदर सरस तव उदरवर नाहिंन उपमा आन ॥

नाभी वर्णन कवित्त ।

ललित रोमावली पपीलका को आल कै शृङ्गार लता आल-बाल चारुताई को बिलास। सिसुता समानी सुठि कैधौं मैन मुनि गुफा भौंर छवि अपगामै रंगपाल कै प्रकास ॥ सुरुचि सु-द्वार तुव नाभीवरदार कीधौं लच्छ भँडार पिय चित चञ्चरीक बास। मोहनी-मवास कैधौं आ-नँद निवास कैधौं याही भास-कूप ते कढ़ो है खास रूपरास ॥ २५ ॥

त्रिवली वर्णन कवित्त।

राजि रही त्रिवली अनूपम उदर पर हरि को सुभाय नहीं मन हरि लीना है। सुखमा को सार लै सँवारि कै सुधा तें विधि राधे को बनाय मेरे आन मोद भीना है ॥ ऐसी नहिं पूर्व कोऊ भई औ न दूजी अब होयगी न पुनि

यहि भाँति भाव कीना है ॥ भनै रंगपाल तब ठीक दै हिये के माहिं चतुर बिधाता तीनि रखा रेखि टीना है ॥ २६ ॥

रोमराजिव बर्णन कबित्त ।

आनन मयङ्क सुधा सरस सुबास पाय पान करिबे को अति हिय चाउ लही है। नाभीबर बामी ते जु रोमराजी अहिदार कढ़ि चट ऊरध की गैल चारु गही है ॥ रंगपाल भनत सुना-सिका बिलोकि करि उरग अराती चोखो चंचु जानि सही है । उरज जुगल तुंग भूधर की ओट पाय शंका मानि मनहि छपाय जनु रही है ॥ २७ ॥

उरोज बर्णन कवित ।

रति रण मंगल के हेत ये कलश कैधौं धाम के कँगूरे नीके मोहनी के चोज हैं । कैधौं मन-मथ बाजीगर के बटा हैं बर कैधौं देव टोने के सु बैठे भरे मौज हैं ॥ तरुणाई सिंधु तरिबे को बिबि तुम्ब कैधौं रंगपाल कैधौं शोभासर के स-

रोज हैं । मैन रमणी की लसै सुन्दर सिंधोरे कैधौं देखियत बाल तेरे उन्नत उरोज हैं ॥२८॥

छबि उपटी की तरुणाई प्रगटी की दुन्दुभी दुउलटी की लसै पङ्कज गटी की है । मोहनी कुटी की चारु जादू की गुटी की बटा ललित नटी की मैन माहुँलि डटीको हैं ॥ कुम्भ करटी की की अट्टाड गुर्जटीको रंगपाल प्रजुटी की लघु पुरट घटी की है । कुच बधूटी की जग्मटी की सु लटीको नीको कञ्ज सम्पुटी की भौंरटी की आनि टीकी है ॥ २९ ॥

कुचाग्र स्यामता वर्णन क० ।

बिरचि बिरञ्चि दच्छ उन्नत उरोज तापै दीठ न लगै जु याते नीठ स्याम कीनो है । रंगपाल भनै कैधौं कोकनदकलिका पै भ्रमर अचल भयो सुरस अधीनो है ॥ कैधौं चारु मोहनी के मठ पै जटित हेरि मन फरकत मरकत को नगीनो है । कैधौं रूप-रतन खजाने के महल पर मदन महीपति मुहर करि दीनो है ॥३०॥

कोकनद सद मद रद के करन नैन कान्ह मोद प्रद छवि छद की जो हर है। मन्द मुस-कानि पै कृपान मनमथवारी अधर सरस अर-विन्दन को हर है॥ ताब न गुलाब की कपोलन की करै सरि दन्त फाव देखि डूबे आब मै गोहर है। रंगपाल नौठ कुच स्यामता प्रमाने रूप र-तन खजाने पै मनोज को मोहर है॥ ३१॥

भुज बरणन सवैया।

काम को मूल हरैया सुभामिनि तो भुज मूल जु गोल सोहाये। गोरे अनूपम रंगजू पाल त्यों कोमल भाय उतारे से भाये॥ लालन को मन पाशिबे को करतार मनो वर पाश बनाये। देखि छटा हिय धीर नहीं मुख पंकज मै जा मृणाल छपाये॥ ३२॥

गोरे गोरे गोल भामिनी के भुज मेरे आन निज निपुनाई दरसाई चारि भाल को। जात रूप सरस कठिन दरसत आछे मणिन जटित साजे भूषण के जाल को॥ अमल त्यों कोमल

सुमाखन से परसत होत है निहाल मन नन्द जू के लाल को । भने रंगपाल देखि सुखमा विशाल उर सौतिन के साल मुख मलिन मृणाल को ॥ ३३ ॥

दोहा ।

गोरी गोरी बाँह मैं नवभूषण को साजि
ये मृणाल के वदन मैं पंक लगाये गाजि ॥३४॥

कर वर्णन - सवैया ।

अरुणै अति कोमल पानि लसैं उपमा नव पल्लव सोहन को । चख चञ्चल जाय अरैं न बहैं रुचि और कोऊ दिशि जोहन को ॥ शुभ रेख विराजित रंगजूपाल किये उपमा नव टोहन को । वर मन्त्र लिख्यौ मनमोहन को मनमोहन को मन मोहन को ॥ ३५ ॥

मेहँदी युत पानि वर्णन सवैया ।

चारु सुरद्रुम के दल बैठि कै इन्द्रवधू गण मोदहि साजैं । कोमलता की कि रागमई भुवि ता पर भौमज भौर सु भ्राजै ॥ मोहन मन्त्र

लिख्यो हरि के इत मैन कि मोहन मोहन काजै । रंगजूपाल भनै तव पानि कि मेंहँदी के वर बिन्दु बिराजै ॥ ३६ ॥

नखाङ्गुली मुद्रिका वर्णन सवैया ।

पाँति लसी नख की अति चारु प्रभाधर भूरि लिये अरुणाई । आँगुरी त्यों लखि आँगुरी सी मति होति कहूं जु चलै न चलाई ॥ रंगजू पाल मनोभव के वर लेखनी के मुख मै मसि लाई । मूंनरी ते छबि दूनरी कै मनमोहन को मन लीन चोराई ॥ ३७ ॥

कर भूषण वर्णन दोहा ।

करनि सुचुरी हरी हरी हरी हरी मन वेश ।
गजरो कङ्कन लसत जनु कला निसेश दिनेश ॥

कर भूषण तथा भुजभूषण वर्णन सवैया ।

लाल की पोंची तथा गजरो गजमुक्तन को मन लेत हरयो है । मानहु भानु सुधाधर को जु सकेलि कला यक ठौर धरो है ॥ बाजू सुबन्द लसै भुज पै वर कंचन के यों जराउ जरो है ।

ज्यों उड़ संकुल रंगजूपाल सभा बिजुरी पर आ निवासो है ॥ ३९ ॥

पृष्ट वर्णन सवैया।

सोवत आजु सखी सुख सेज अनोखी लखी अरी प्यारी कि पृष्टि है। चारु महाचिलकारो अनूपं सचिक्कनं मोहै लपेटति दृष्टि है ॥ रंगजू पाल मनोहरता सुकुमारता सुन्दरताई कि सृष्टि है। हाटक पट्टिका की उपमा नहिं सोभ लहै कदलीदल दृष्टि है ॥ ४० ॥

कण्ठ वर्णन कवित्त।

देखि वर कंठहि कपोत कँहसोई करै वारि-निधि बूडे कम्बु हिय लाज आई है। मन हरि लीनो है सुभायन गोविन्द जू को जामै पीक लीक ठीक परति दिखाई है ॥ रंगपाल भनै स्वच्छ रेख त्रय अनूप राजै भाव के अरी ज्यों तीन लोक की निकाई है। स्याम स्वेत अरुण मणिन के विभूषण ज्यों मानो राग रागिनी स-राग छबि छाई है ॥ ४० ॥

ठोढ़ी वर्णन सवैया।

वलि कीरतिजा विलसै तुव ठोढ़ी अनूप लोनाई रही भरि कै। लखतेई बनै कहते न बनै छबि लीन मनै हरि को हरि कै॥ मकरन्द के व्याज गुलाल के पुष्प ते सन्तत आँसू रहै ढरि कै। पुनि रंग जू पाल रसालन के फल सालन्ह पीरे रहैं परि कै॥ ४२॥

चिबुक बिन्दु वर्णन -कवित्त।

दीनी यों अनूपम गोराई करतार तन वारि डारौं चम्पा सम्पा कंचन समेत है। लङ्क लच-कन पै जु ह्वै रहे लटू गोविन्द काठ देखि कंबु कीनी वारिधि निकेत है। रंगपाल तापै वलि कीरतिकिशोरी तुव चिबुक असित बिन्दु ऐसी छबि देत है। विकसित मानहु गुलाब के सुमन बीच बैठि प्रमुदित अहिछौना रस लेत है॥

अधर वर्णन सवैया।

बानि लसै अरुणारे अनूपम त्यों मधुराई रही सरसाय कै। लज्जित ह्वै मनमै अति वि-

द्रुम लेत प्रवाम सुवारिधि आय कै॥ बंधुक पुष्प मरन्दहि के मिस आँसुहि ढारत है दुख पाय कै। भो जड़ जख पियूष रह्यो केहि लोक धौं रंगजू पाल छपाय कै॥ ४४॥

दन्तछाँस वर्णन दोहा।

दाड़िमको दरक्यो हियो लखि दंतनकी पाँति।
त्यों लखि हाँसहि दामिनी काँपति न धीरधराति॥

सवैया।

मन्दर कन्दर चन्दर आय कै हीरे दुरे मनै आनि गलानी। दाड़िम को दरक्यो हियरो पुनि कुन्दकली चवली सकुचानी॥ रंगजूपाल भनै परभाव दामिनिहू लखिही थहरानी। ये दुतिवन्त सुदन्त की पँक्ति हसन्त लसन्त अ-अनूप सयानी॥ ४६॥

हास वर्णन कवित्त॥

कैधौं मंजु कञ्ज बीच कमला बसी है आनि ताही के सुज्योति को जु ललित बिलास है। कैधौं मुखचन्द चारु चन्द्रिका चोराई कैधौं चा-

रसी मे मंजुल मरीचिका प्रकास है ॥ रंगपाल भनै कैधौं शोभा के सदन माहिं सारदा गोराई छबि छाई सुख रास है। आनँद के कन्द नन्द-नन्दन की मोहनी की रूप की अगाधै राधे तेरो मन्दहास है ॥ ४७ ॥

रसना वर्णन कवित्त ।

कैधौं बीनधारिणी की कोमल अमल तुल्य कैधौं यह रूप रानीवर सुखकारी है। रंगपाल भनै कैधौं परम सलोनी मंजु रसन की देवी लसी अनुराग धारी है ॥ नीकी नीकी बात की कि मात दिव्य गात की जु कैधौं बारिजात बीच बिष्णुही को प्यारी है । सुधा ते सँवारी जन बरदेनवारी बलि कीरतिकुमारी कैधौं रसना तुमारी है ॥ ४८ ॥

मुख राग वर्णन – कवित्त ।

कैधौं मोददाइनी ललित सन्ध्या भोर की जु रंगपाल सेवत सुद्विज बड़ भाग हैं। मोहन अनंग कैधौं तरुणाई को उद्दोत राग रागिनीन

को कि चाहो चंग राग है । कैधौं है सुकवि सार सोहत रजोगुण को कैधौं नाद-मैनन को अनुराग लाग है। मन के हरबिहार कैधौं रूप भूपति ये ब्रजरानी नागबेलि राग को सोहाग है ॥ ४९ ॥

वानी वर्णन—कवित्त ।

बीना या कमीना को जु चरचा चलावै कौन कारे अलि भ्रमत हिये ना धीर आनी है। रंभ पास बाँसुरी को नासुरी गुमान भयो प्रगट बिलोकियत छतना कहानी है॥ परभृत पिक शुक सारिका बसी हैं बन सारदाहू आपने सुमन मै सिहानी है । सुधा ते सरस मृदु कौन पै बखानी जाय अनवरदानी वानी तेरी ब्रजरानी है ॥ ५० ॥

पुनः—सवैया ।

मोहनी सी वह चन्द्रमुखी मुसकाय जबै कछु बोलती बात है। दन्तन की छहराय छटा बर हीय चलो नहिं मोद समात है॥ रंगभूपाल

सुवासन तें सुमधुव्रत मत्त भयेमड़रात हैं। बीन के धोखे, अधीन भये पहुंचां मृग के गन घेरत आंत हैं॥ ५१॥

मुख बास वर्णन – सवैया।

किधौं चित दै चतुरानन दच्छ रची सुख की जननी संहुलास। मनोभव की किधौं जीविका एह किधौं मनमोहनी को सुविलास॥ लसै कपटै की कृपानी किधौं छवि कीरति रंगजूपाल प्रकास। जु सर्ब सुगन्धन को मदहारि किधौं बलि राधिके तो मुख बास॥ ५२॥

कपोल वर्णन – कवित्त।

तुला के पला हैं पिय प्रेम तौलिबे को किधौं जुगल कलानिधान परमा अडोल हैं। लोल नैन वाजिन के लीला के ललित थल कैधौं लसै गाद्दी रूप भूप की अमोल हैं॥ रंगपाल भनै कैधौं मैन रमणी के वर अमल अनूपम मुकुर अति गोल हैं। मोहन त्रिलोकि मन मोल हैं अतोल सुख पानिप अगाधे राधे तेरे ये कपोल हैं॥

तिल वर्णन—कवित्त ।

ललित ललाटबिन्दु केसर कलित चारु अर्ध चन्द पै ज्यों सुरगुरु बास लीनो है । मधुर अधर राची रुचिर तमोल रुचि बिद्रुम अमोल पर कीनो लाल मीनो है ॥ अमल कपोल गोल लसत सुदेस तिल भयौ या गोबिन्द मन निपट अधीनो है । भनै रंगपाल मानो मैन आरसी मैं रस भीनो जड़ि दीनो झीनो नीलम नगीनो है॥

नासिका वर्णन—कवित्त ।

का पै भाखी जाय तिल सुमन सी रंगपाल जामैं ना सुवास औ न सुबरण लेखिये । कैसे समताई शुक तुण्ड की जु दीन्ही जाय जाकि मधि परम कठोरता बिशेखिये ॥ क्यों करि लहैगो उपमा को या तुनीर भला सन्तत्हीं पीठही की दिसि अवरेखिये । सौंति गर्बनासा उपमा को कियो हासा प्रेमपियही प्रकासा राधिका की नासा देखिये ॥ ५५ ॥

पुनः—दोहा ।

सकतु नीर समुझाय क्यों तिलहु तुले तिलफूल।
अनुपम नासा को जु पै उपमा खोजत भूल ॥

नाक मोती वर्णन – सवैया ।

चाले हरे सुखमाहि के भारज सूक्षम लंकहु त्यों लखि जावै । मन्त्र वसीकर सी हसो मन्द सुवैनन कोकिल वीन लजावै । रंगजूपाल भनै वर यों तुव नासिका मै मुकता छविछावै । गोद लिये अति मोद हिये भरि चन्द मनो निज नन्द खेलावै ॥ ५७ ॥

सींक वर्णन सवैया ।

राधिके तो वर मन्द हँसी पर मोहन गे बिन मोल विकाई । दृग्गन को जु अनन्त प्रभा लखि देखि छटा निज धीर बिहाई ॥ कंचन सींक जड़ी मणिनीलै यों रंगजूपाल सुनाक सोहाई । बाल अली भली चम्पकली बसि मानहु सेत रसे सुख पाई ॥ ५८ ॥

बेसर वर्णन—सवैया।

केधौं मयङ्क सुचक्र धस्यो मन माहिं विचारि विधुन्तुद बाधा। लाँघिबे को नट नैन को कुंडली के नखतावली मण्डल बाधा॥ रङ्गजूपाल भनै भव पै लै मनोभव केधौं सुपाशहि साधा। केधौं बिराजित नीकी नई तुव नासिका मै यह बेसरि राधा॥ ५९॥

श्रवण वर्णन सवैया।

कोश किधौं शुभ मन्त्र के राजहिं सीप किधौं बर कंचन ही के। नैन के चातुर मन्त्री किधौं लसै ये मन के किधौं मित्र हैं नीके॥ रूप महीप के रङ्ग जूपाल किधौं गृह मोहन हार हैं जी के। कै मनभावन के मनभावन मोद बढ़ावन श्रौण सुती के॥ ६०॥

तख्योना वर्णन—सवैया।

कीरतिलाडिली को परमा. अँग अङ्गनि को सकै भाखि जु को कवि। रम्भा रमा उमा काम प्रिया सची आदि को जात गुमान सबै

दवि ॥ रंगजूपाल सु छाय रही वर कानन ऐसी तय्योनन की छवि । मानहुं आननचन्द उभै दिसि ह्वै तन धारि विराजि रहे रबि ॥ ६१ ॥

अन्यच्च ।

रंगजूपाल मनोहर आनन देखत नाहिँ परैं पलकैं हैं । ज्यों शशि अम्मृत पान किये अहिनी पलटो यों लसैं अलकैं हैं । श्रौण तय्योन जु स्वेत दुकूल ढके दरसै छवि यों छलकैं हैं । मानहु भागीरथी जल मैं प्रतिबिम्ब दिवाकर के झलकै हैं ॥ ६२ ॥

करणफूल वर्णन — रूप घनाक्षरी ।

तिल सुमनस छबिहारी नासिका मैं लखि हलन बुलाक की ललन रहे अनुरागि । कंजन गुमान भूरि भञ्जन चखन राधे अञ्जन लगाय उर खञ्जन को दई दागि ॥ तापै तुव कानन सुकलित करणफूल जटित जराय ताको ऐसी ज्योति रही जागि । रङ्गपाल मुख ज्यों सरद राका सिन्धुज के दोऊ दिसि मुदित नखतमण रहे लागि ॥ ६३ ॥

नेत्र वर्णन-कवित्त।

सुन्दरता भारे देखियत रतनारे रङ्गपाल कजरारे बिन अञ्जनी सँवारे हैं। मोद सुध-पारे हिय लहे प्राणप्यारे गर्व सौतिन के गारे त्यों कुरंग मन हारे हैं॥ झष झखि मारे छिपे जल लाज मारे डरे खञ्जन बिचारे उर पर दाग धारे हैं। जलज निहारे रवि व्रत अनुसारे तज रेजे के कतारे ता करेजे करि डारे हैं॥

पुनः—कवित्त।

खञ्जनन्हि ताके पै न धीर उर ताके वारि-जात मद थाके व्रत धारे सविता के हैं। बसे बन जा के मृगकुल सरमा के ऐसे रति न रमा के भरे दीह परमा के हैं॥ मीनमुख ढाँके जल मधुप कहाँके कहि कौन उपमा के ये देवैया कामना के हैं। रंगपाल छाके नेह मोहन लला के चारु चञ्चल चलाके नैन बाँके राधिका के हैं॥ ६५॥

भौंरमद थाके जित तित बिलला के रहे

कञ्जन लजी के भये खञ्जन हलाके हैं। कुरँग पराके दौड़ कानन न ताके अरु वारि माहिँ ढाँके बपु मैन के पताके हैं ॥ रङ्गपाल ताकी कौन जोग समता के जे सुमोहनलला के मोद प्रद मनसा के हैं। अखिल कला के भरे छवि के छलाके चारु चञ्चल चलाके नैन बाँके राधिका के हैं ॥ ६६ ॥

जोहन के जोग प्रेम पोहन सखीन मन रंगपाल मोहन के मोहन सोहात हैं। कजरारे दूर्छ्या छबीले चटकीले त्यों नुकीले वो नसीले सुरसीले दरसात हैं ॥ दौरवारे दीरघ मरोरवारे कलित ललित डोरवारे उपमा न ठहरात हैं। अवलोकि मीन खञ्ज कञ्ज वो कुरङ्ग बुड़ि जात उड़ि जात लजि जात भजि जात हैं ॥ ६७ ॥

लोचन सलोच सोच मोचन तिहारे राधे हेरि हरिराय रहैं तन मन वारि कै। हलुके अनङ्ग वान ह्वै के बदरङ्ग मृग दुरत फिरत हैं बनन्ह धरि डारि कै॥ पुच्छन पटकि झखि झखि

अब बूड़े वारि तरफरहिँ खञ्जन बिचारे हिय हारि कै। रंगपाल भनत सकोचन ते अरविन्द गिलत मलिन्द निसि मरत बिचारि कै ॥ ६८ ॥

सील सुचिकीले भरे चातुरी चसीले रतनारे सुरसीले रङ्गपाल जू रँगीले हैं। मोहन के मोहन जसीलें जु गठीले कञ्ज खंज मन ढीले मीन मृगन हँसीले हैं ॥ दीरघ छबीले त्यों सुढार गरबीले लोल सरस लजीले अति सुघर सजीले हैं। चारु चटकीले मटकीले करकीले पैन सैन नवकीले नैन अजब नोकीले हैं ॥ ६९ ॥

मैनतारे।

पुस्करज पाँखुरी बिछाय चन्द्रमण्डल में कैधौं कोउ थाप्यो शालग्राम सुखदैन हैं। अनुराग बलित ललित हास पर कैधौं आसन कियो सुरसु नायक सचैन हैं ॥ कैधौं लाल रेशम के जाल मै फँस्यो है मीन तापै भृङ्ग-अली काकु शंक मन मैन हैं। रंगपाल दाता मोदहीके पीके जीके किधौं पोखि सुखमीके नीके तारेनैन हैं ॥

अति अनियारे कोरवारे कारे डोरवारे दीर-वारे दीरघ ज्यों बर मन दूत री । भई है ख-राब खूबी खासे खंजरीटन की गई त्यों गरूरी अलि अम्बुज की ऊतरी ॥ रंगपाल भनत सकल महिमण्डल में ह्वै रही बिदित जासु जानता अकूतरी । देखि कै अनूतरीं तो नैनन की पू-तरी सो पाइन की पूतरी लौं भये नन्दपूत री॥

बरुनीकटाक्ष.दि ।

कोमल करुणि रंगपाल मखतूलहू ते भौं-हर्न पै मैन धनु बानिक बिकाती हैं । राग भरे दीरघ चपल कजरारे चारु चार धरि छाती दे-वता-तो-हू सिहाती हैं ॥ मीन मानभंजन हैं कञ्जन के गञ्जन त्यों खूबी ते खराब भये खंजन जमाती हैं । पैन मैन-बानहू ते येरे कान्ह केरे उर तेरे नैनकोर की मरोर फोर जाती हैं ॥

अक्षर्मवर्णन सवैया ।

कैधों नराच भरे विष ते बिलसैं कमनैत मनोभव केरे । चित्त चोराइबे को तम है किधौं

सौतिन के मदभंजन हेरे ॥ कै रसराज रसै रस खाम कि खंजन नैन सुबाज बसेरे । रंगजूपाल भनै किधौं ये पिय के मनरंजन अंजन तेरे ॥

भौंह वर्णन — सवैया ।

आसन कै रसनायक के बरहाव सुभाव के कैधौं मकान हैं । पूरण प्रेम के सासन लेख कि यन्त्र सुहागहि के सुखदान हैं ॥ राहु की बाधा निवारन हेत किधौं नखतेश सुधाधौ कृपान हैं । बङ्क किधौं भृकुटी ब्रजबाल की रंगजूपाल की काम-कमान हैं ॥ ७४ ॥

भाल वर्णन — सवैया ।

कंजन को किधौं आछो केदारजू कैधौं सुधाधर भाग रसाल है । पट्टिका कैधौं बिजै की लसै यह कैधौं अनूप सोहाग को थाल है ॥ शोभा को सेज कि भाग सभा वर जा लखि मोहे सुनन्द के लाल हैं । कै उपकण्ठ है गंग को आधर रंगजूपाल की बाल को भाल है ॥

केसर आड़ वर्णन—कवित्त ।

अञ्जन बिनाहीं नैन खंजननि गंजन हैं कुटिल कटाच्छ ज्यों मनोभव की असी है । ताकी खरसान जनु कानन तलोन आछि मन पासिबे की पासी खासी मन्द हँसी है ॥ तापै ब्रजरानी तव ललित ललाट छबि कलित सु केसर की आड़ की यों लसी हैं । रंगपाल मानो अर्ध चन्द्र पर चण छटा कच घन घटा ते निकसि आनि बसी है ॥ ७६ ॥

टीको वर्णन—कवित्त ।

आनँद को कन्द कै अमन्द अर्द्धचन्द पर प्रात छबि धारे लसै मारतण्डली को है । अनुराग कलित सोहाग निज सेज कैधौं बिलसत रंगपाल देत सुखही को है ॥ प्रभा के प्रभाव पर परम प्रमोद पूछो आसन कियो सु कैधौं नन्द उरवी को है । हाटक खटिक पद्मराग सो जटित कैधौं मोहत भटित मन बाल भालटीको है ॥ ७७ ॥

बेंदी वर्णन — कवित्त ।

खासी सुधा सुकला सो लसै जु निछावर कोटिन मार की दार हैं । येई लला वृषभानु-लली इनसी नहिं आन रची करतार हैं ॥ बेंदी जराव जरी वर भाल पै भासु जगी रमणीय अ-पार हैं । अर्ध मयंक पै रंगजूपाल भयो ज्यों नवग्रह को अवतार हैं ॥ ७८ ॥

अरुण बिन्दी - दोहा ।

बाल भाल पर राजई वर वन्दन को बिन्दु ।
भुविनन्दहि आनन्द ते गोद लिये हैं इन्दु ॥७९॥

स्याम बिन्दी वर्णन — दोहा ।

मृगनैनी वर भाल पर बिलसत मृगमद बिन्दु ।
जनु कलिन्द नन्दहि लिये अङ्क अनन्दित इन्दु॥

बन्दी वर्णन — कवित्त ।

कैधों भाग वो सोहाग दोऊ याही पाँवड़ेन पाव धरि आये छवि छावत अनन्दी है । कैधों पाटी ललित बितान चन्द्र आनन की ताहीकी सुझालर जु सौतिमही दन्दी है ॥ कैधों नन्द-

लाल की कुरंग मन फाँसिबे को रंगपाल भनै देखियत यह फन्दी है। रूप उँजियारी किधौं कीरतिदुलारी तुव भौंह पै रसाल बिलसति बर बन्दी है ॥ ८१ ॥

मुख मंडल बर्णन कवित्त।

पाय निज घातहि ग्रसैत सिंघिका को तनै बहुरि दिवस माहि देखियत दीन है। भनै रंग-पाल एक पूर्णिमा को पूर्ण होत और सब तिथि मै रहत कलाछीन है ॥ ता सम कहैगो कौन दूषण इतेक जामै तापै विषबन्धु त्यों कलङ्क ते मलीन है। आनँद के कन्द ब्रजचन्द है चकोर जाके राधे मुखचन्द सब दूषण ते हीन है ॥८२॥

पुनः—कवित्त।

सकल कलानि परिपूरण अछेह पुनि लसत अशङ्क उर आनँद भरत है । रंगपाल उदित रहत निसि बासरहू रहित कलङ्क ते त्यों मन को हरत है ॥ परमा परम धर राधे मुखचन्द वर जब जब करतार चित्त पै धरत है । रही

गुनि उपमा शशाङ्क को सु तव तव व्याज परि-
वेषहि के घेरिबो करत है ॥ ८३ ॥

जरी कोर बीच मुख वर्णन—सवैया।

रङ्गजूपाल चकोर चखान को आनँद की उदई सुघरी है। तारे विभूषण सारी सुपेद बि-राजति चाँदनी ज्यों पसरी है॥ गोरो मुखानन कोर-जरी बिच छाय रही छबि ऐसो खरी है। शोभन सारद पूरण चन्द्रहि मानो छटा परिवेष करी है॥ ८४॥

तथा मुक्ता कोर बीच—सवैया।

मनरंजन लोचन लाचभरे सहजै सुरभी-छवि छोरन हैं। मुसकान विलास मुखानन को छहराय छटा चहुंओरन हैं॥ सिर सारी लसै जरतारी सुवेश लगो मुकतावली कोरन हैं। मनो सारदचन्द पै रंगजूपाल तरैयन को तन्यो तोरन है॥ ८५॥

स्याम सारी में मुख छबि वर्णन सवैया।

नैन लहै को न लूटत क्यों फल रीझि रही

लखि कै बलबीर मै । •कीरतिनन्दिनी रूप की रासि लसैं गुरु नारिन की बर भीर मै ॥ रंगजू पाल सुआनन की दुमि छाय रही छबि स्यामल चीर मै । मानहु सारद के शशि को झलकै प्रतिबिम्ब पतंगजा-नीर मै ॥ ८६ ॥

अलक वर्णन कवित्त ।

कैधौं या शशाङ्क को पियूष बर पान करि उरग की दार पलटी है हिये ललकै । कैधौं सद्य अमल अनूपम कमल पर अलि बाल माल ह्वै थकित रहे चल कै ॥ रंगपाल भनै कैधौं स्वच्छ आरसी के मध्य फारसी हरफ मैन लिख्यो छबि छलकै । कैधौं अति कारी सटकारो प्यारी राधिका की सौंधे भरी झलकैं मरोरवारी अलकैं ॥ ८७ ॥

केशपास वर्णन कवित्त ।

शोभा के सरोवर के लसत सिवार कैधौं रचि के शृङ्गार तार राखे करतार हैं । अलिन की पाँति कै सघन घन रंगपाल स्याम मखतूल ताग

कैधौं चंद्रिहार हैं ॥ नीलमणि करिणि कतार राजैं कैधौं तम बरछी के पच्छ कैधौं भानुजा की धार हैं । कैधौं अति कारे सटकारे चटकारे प्यारे राधिका छबीली के छबीले छूटे बार हैं ॥

पुनः सवैया ।

बार हैं आछे कुहू के किधौं सिषि पच्छ किधौं अलिही की कतार हैं। तार हैं कैधौं सु ये मखतूल के कै मणिनील मयूष पसार हैं ॥ सार हैं कैधौं लसै रसराज के रंगजूपाल निकाई उदार हैं । दार हैं व्याल की राजित कैधौं सु ये वृषभानुकुमारि के बार हैं ॥ ८९ ॥

पुनः कवित्त ।

मरकत सार जैसे कुहू के कुमार जैसे पुष्कर सिवार जैसे भानुजा की धार हैं । मोरपखवार जैसे स्याम चौर मार जैसे बारिद सुढार जैसे तम के पसार हैं ॥ दिनकर बार जैसे उरग को दार जैसे भनै रंगपाल जैसे सुन्दर शृङ्गार हैं । अलि के कतार जैसे मखतूल तार जैसे रूप की उदार तैसे तेरे वर बार हैं ॥ ९० ॥

दोहा।

सार सङ्गार कुमार शनि व्याल बाल अलि माल
शुभा ताल से बाल से बाल-जाल तुव बाल ॥

पाटी वर्णन सवैया।

आय मधुव्रत पाँख पसारि कै बैठे किधौं हिय मोद बढ़ाई। रंगजूपाल भनै रसनायक पानि किधौं दोउ राखिव आई ॥ कैधौं लसै घन की पटली तम को किधौं चन्द्र वितान तनाई। कैधौं सचिक्कन मोधे सनो चटकीली छबीली की पाटी सोहाई ॥ ९२ ॥

मुक्ता माँग वर्णन।

कौतुकी, कुन्दकली अवली सुफणी फण ऊपर कैधौं धरी है। चन्द के चूसत राहु हिये सु किधौं सुधा छीट कतार परी है ॥ रंगजूपाल किधौं तम ऊपर तारन की यक पाँति अरी है। कै रसरास पै हांस के बालक कै तिय माँग मै मुक्ता लरी है ॥ ९३ ॥

सिन्दूरी माँग बर्णन—सवैया ।

बेनी भुजङ्गिनी की मणि यों बर बेनी सुफूल की भा उपटी है । त्यों चिलकारी जु पाटी लसै जेहि पै बलि दीठ परे रपटी है ॥ माँग मैं रेख सिंदूर की यों तेहि की सुखमा मन मेरे डटी है । रंगजूपाल भनै गिरि नील पै भारती धार मनो प्रगटी है ॥ ९४ ॥

सीसफूल बर्णन कवित्त ।

पाटी पै ललित सीसफूल जगमगि रह्यो रंगपाल जाहि देखि रीझै नँदनन्द है । कैधौं अंशुमान-तनया के बर वारि बीच वारिज प्रसन्न चखु पूरत अनन्द है ॥ असित उरग कैधौं परम प्रमोद मानि धार्यो निज फणि पर सुमणि अमन्द है । बश करि राहु के भो छाती के तखत पर तखतनशीन भानु बखतबुलन्द हैं ॥ ९५ ॥

जूरो बर्णन कवि० ।

अलिन के निकर बटुरि बैठे एक ठौर कैधौं शालग्राम मिला बिलसत रूरो है । रंगपाल कु-

डली कै बैठ्यो है उरग कैधौं नील इन्दीवर वर कैधौं तम कूरो है ॥ रवि को कुमार कैधौं देखिये शृङ्गार कैधौं काम-बाम-धाम को कँगूरो छवि पूरो है। बासव बगीचा को अनूप नारियर कैधौं चौकनो चटकदार दार यारो जूरो है॥

बेनी वर्णन कवित्त।

छीर अरु चन्दन सो उरग की दार को जु कैधौं कोउ पूज्यो हिय हरख बढ़ाय कै। रंगपाल भनै कैधौं हास रस अनुराग रहे रसराज सो बिनोद उपजाय कै ॥ त्रिगुण जु एक ठौर भरे आनि कैधौं यह रही है त्रिबेणीधार कैधौं छवि छाय कै। कैधौं लाल डोरी वो चमेली को सुहार मेलि राधिका की बेनी सखी राखी है बनाय कै ॥ ९७ ॥

दोहा।

मृगनैनी की पीठ पै झूमि बेनी छबि जोय।
कनक-कदलिदल पर मनहुं रही नागिनी सोय॥

गोराई वर्णन सवैया।

शोभनो कैसो जु चम्पक चारु यथा बसी केतुकी मै रुचिराई। रंगजूपाल भनैं कस केतकी केसर रूर जथा सुखदाई॥ केसर कैसो सुकाञ्चन जैसो सुकञ्चन कैसो छटा जिमि गाई। कैसी छटा बलि प्राणप्रिये लसी रावरे अंग की जैसी गोराई॥ ९९॥

सम्पूर्णमूर्ति वर्णन कवित्त।

चढ़ी ऊंचे छत पै दुलारी वृषभानु जू की, भूषण सुअंग जोति बगरी बिसाल है। नन्दलाल रंगपाल निरखि निहाल भये केते कहैं बेदभाल यह कौन हाल है॥ चन्द की कलाका की चलाका की सलाका-सोन दीपक कतारे की भलाका की बहाल है। मोहनी को ख्याल है की लालन की माल है मरीचिका को जाल है की मदन मसाल है॥ १००॥

बसन बर्णन दोहा।

लाजहि की काया किधौं जोबन जाया एह।
भाग सहेली कै लली सारी भली सुदेह॥१०१॥

स्यामसारी मैं अङ्ग शोभि वर्णन कवित्त ।

कीरतिकुमारी सुकुमारी अति सोंधे-सनी सारी नीलधारी चढ़ी ऊंची अटा चाय कै । रं-गपाल भनै चहुंओरन तें चकित ह्वै भाखहिं घ-नेरे जन ऐसे टक लाय कै ॥ विधि की बनाई कै अनूपम अमल यह जातरूप लता ताहि घेरे तम आय कै । कैधौं घन मध्य चञ्चला अडोल कैधौं रही धूम माहि लाय की लपट छबि छाय कै ॥ १०१ ॥

अंगवास वर्णन दोहा ।

टूती गती अदृष्ट की मन करषण सुविकास ।
इष्टदेवता राधिके तो अँग सहज सुवास॥१०२॥

कवित्त ।

कहा बारिजात मन्द लागै पारिजात रंग-पाल बलिजात एला मालतीहू मात है । केतो जुही बात वो गुलाब होत हात केवड़ा न नि-यरात दौन दच्छिन को बात है ॥ बेलाऊ बि-लात कासमीरहू हेरात मृगमद पछितात तर

अतर रहात है। अम्बर सरमात मोपै कहि न सिरात जैसो लाड़िली के गात सो सुगन्ध सरसात है ॥ १०३ ॥

सुकमारता वर्णन ।

पायन बिछौना गड़ि जात मखमलहू के रहति सशंकित गुलाब पखुरीन मै । मृगमद केशर अतर आदि लावै कौन ऊबी रहै सुतन सुगन्ध की भरीन मै ॥ जैसी सुकुमारी बलि कीरतिकुमारी तैसी रंगपाल कहां हैं नरीन बापुरीन मै । है न पन्नगीन मै न लालन नगीन मै न तौ सुकिन्नरीन मैं बिलोकी न सुरीन मै ॥ ऊबी सी रहति निज अंग परिमल ही ते काज कौन और खुशबोई के मसाले ते । रंगपाल भनै लोनी लली की लचति लंक भारन सुप्राणप्यारे प्रेमही निराले ते ॥ मन्द मन्द गौनै पाय जावक जलूस पुनि सुमन समूह लागे अनुराग पाले ते । मखमल पांवड़े पै चलिये कहै को कहुं छाले पग परैं यौं जुबानीही निकाले तें॥

सर्वांग वर्णन कवित्त।

कञ्जपद चम्पकली आँगुरी नखत नख कोहर से गुलफ गयन्द की सी चाल है। सिंह कटि पान सो उदर पानि पल्लव से बाँहु पास दर ग्रीव चिबुक रसाल है॥ दाड़्यो दन्तहास छटा बिम्बाधर कीर नासा मृगनैन भौंह धनु चन्दभाग भाल है। केश अलि रंगपाल कञ्चन से गति सब सोंधे की सी बास लाल देवता सी बाल है॥ १०६॥

तनक बनक पै सुकानक तनक लागै लाल की लरी सी रंगपाल उर धारिये। सहज सुबास ते सुबासित महल महा मञ्जुलता मूरति सी दृग तोरि डारिये॥ चातुरी की साला गुण थाला सीलसागर सी बानि मधुराई सौंह सुधाहू बिसारिये। आनँद के कन्द जगबन्दन सु ब्रजचन्द राधे मुखचन्द पै करोरि चन्द वारिये॥

सौरभ झकोरवारी मुक्ताहल छोरवारी सारी जरी कोरवारी झलाझल झलकैं। रंगपाल भनै

ग्रीव सुखमा बटोरवारी ‘रमान तोरवारी लाल माल झलकैं ॥ अमृत झलोरवारी बानी त्यों त-मोरवारी लाली भानु भोरवारी आभा बानि छलकैं । डोरवारी आखैं चारु कोरवारी भौंहैं चितचोरवारी अजब मरोरवारी अलकैं ॥१०७॥

सकल सिंगार साजि भूषणाभरण कर कमल सनाल बाल छीर निधि जाई सी । सील की सभा सी सुकुमारता की मूरति सी लोकन की अखिल लोनाई लूटि लाई सी ॥ रंगपाल भनै पूरी पद्धति सुप्रेमही की चित चतुराई चारु सारदा पढ़ाई सी । मुक्त रुचिराई जाति हेरत हेराई चलि देखिये कन्हाई सो जोन्हाई मै अ-न्हाई सी ॥ १०८ ॥

विभौ वर्णन कवित्त ।

राधे महाराणी बैठी मणि-मै सिंहासन पै फैली मुखचन्द चारु किरिणि कतारे हैं । रंग-पाल धनाधीश रानी पानदान लीने रोहिनी बिजन सीला भौंरन बिडारे हैं ॥ गिरा गुण

गावैं सची अतर लगावैं, लीने छाया छत्र मञ्जु-घोषा रागनि उचारे हैं । रम्भा चौंर ढारैं उमा आरती उतारैं रमा भौंहनि निहारैं रती राई लोन वारे हैं ॥ १०९ ॥

दोहा ।

आनद आनद शक्ति की मोहन मोहन हारि ।
जीवन जीवन मूरि की राधा बाधाहारि ॥११०॥

कवित्त ।

अंगनि गोराई कहा चण भा विभूषण ते त्यौं नख कतारे तारे मलिन बेचारे हैं । रंग-पाल भनै चारु आनन अमल ओप कोटि कोटि जिन पै सरद्चन्द वारे हैं ॥ आनँद बढ़ौना तापै कानन तय्योना रूरो अवलोकि छवि दिनमणि मन हारे हैं । मोहमई तम ताम क्यों न मिटै ताकी वृषभानु के सुता के जिन इमि ध्यान धारे हैं ॥ १११ ॥

इति श्री रविवंशोद्भव श्री विश्वेस्वरबक्सपाल वर्मात्मज रंगनारायणपालकृते अंगादर्शे श्रीराधाप्रत्यंगवर्णनं नाम प्रथमः प्रकाशः ॥ १ ॥

अथ श्रीकृष्ण नखसिख लिख्यते

श्री राधावल्लभायकृष्णाय नमः।

अथ चरण वर्णन कबित्त।

सुरतरु नवदलहू ते मञ्जु राते शुभ अंकुशादि चिन्ह हिय आनँद भरण हैं। बेद वो पुराण जासु गावैं नेति नेति यश बन्दित सुरन चित-चिन्ता के हरण हैं॥ सुरसरिहू ते अघ-ओघ की दरणहारे कामधेनुहू ते कामपूरणकरण हैं। रंगपाल अनुपम औढरढरण बलि असरण स-रण गोबिन्द के चरण हैं॥ १॥

ईंगुर के ईश कुरबिन्द के कलपवृक्ष पल्लव प्रभा के प्रच्छ बारिजवरण हैं। रंगपाल भनै अनुराग के अँकुर कारी मंजुल महावर के मन के हरण हैं॥ बन्धुजीव बन्धु के अमित्र कृनारनु के कि मित्र मित्रही के नारँगी के निदरन हैं। गरद गरूर गुड़हर को करनवारे जीवन हमारे कृष्ण प्यारे के चरण हैं॥ २॥

आनँद पसारन परमजन-तारन त्यों दीननि-उधारन सु जानत सकल हैं। गङ्ग के जनक फल वासन ये रङ्गपाल आसन सु छबि विघ्न-नाशन प्रबल हैं॥ भव भवपोषण भरण के कर-नहार औढरढरण शम्भु मानस के थल हैं। अमल कमल हैं नरम मखमल हैं अरुन जपा दल हैं कि हरि पग तल हैं॥ ३॥

ललकि लुभानो सुख कन्द ब्रजचन्द जू के नखत निकाई निदरन नख आली मै। चारु नख आलो ते उमगि आँगुरिन आँगुरिन ते अ-नोखी पग पृष्टिन उताली मै॥ पग पृष्टि हू ते जौलो कोमल अमल गोल गुलफन माहिँ आयो विसद बहाली मै। भनै रंगपाल जू हमारो मन दौरि तौलौं लोट पोट भयो तरवान की सु-लाली मै॥ ४

पुनः—सवैया।

जा गुण गावैं महेश गणेश फणेशहु लाय सदा रट को रहैं। ध्यावतहीं अपि रंग जू पाल

कछू भवजाल को ना खटको रहै ॥ पुत्र तिया गृह वित्त के हेत इतै उतै नाहकहीं भटको रहै। मानि कही चित चायन ते गोविन्द के पायन मै अटको रहै ॥ ५ ॥

आंगुरी वर्णन स० ।

दीननि आनँद दीवे के हेतु सु मानो दया दस रूप धरे री । खासी शृँगारही की कलिका सी प्रकाशी लसै अनुराग रसे री ॥ मंजु अनूप मनोहर हैं धनि ते गनि जे सपनेहु लखे री । रंगजूपाल की जीवन मूरि हैं आँगुरी केशव पायन के री ॥ ६ ॥

नख वर्णन स० ।

पायन के नख श्रीहरि के दस देह ज्यों आनँदकन्द ठयो है । नेक अविद्या अँध्यारी रहै नहिं जो इनके दिसि चित्त दयो है । रंग जू पाल प्रकाश बिलास कछू पग धोवत माहिं गयो है । सोई सबै जुरि कै यक ठौर समुद्र मथे पर चन्द भयो है ॥ ७ ॥

एड़ी वर्णन दोहा ।

अरुण अरुण गोपाल की एड़ी सुखमा आल ।
कह कोहँ कह नारँगी सम्पुट कहा प्रवाल ॥

जंघ वर्णन सवैया ।

नन्दकुमार के जंघ सुढार सुओज अपार भरे चित दीजै । आम्बर छादित भाधर पीन मनोहर रंग जू पाल पतीजै । नैन निमेष बिसारि सनेह निहारि कै जीवन को फल लीजै । केदली खम्भ रु दिग्गज सुण्ड की दै उपमा बदनाम न कीजै ॥ ९ ॥

कटि तथा किङ्किनी व० क० ।

आनँद के कन्द श्रीगोविन्दजू की लङ्क माहि मेरे जान सुखमा त्रिलोक की समेटी है । दासन के तीनों ताप दाप को हरनहारी मृगराज हिय की गरूरी सब मेटी है ॥ जरी कोरवारो पीतपट को सँवारो पुनि मणि करधनी ऐसी उपमा सुमेटी है । भनै रंगपाल मानो नीलमणि शैल मध्य तार के कतार जुत दामिनी लपेटी है ॥ १० ॥

उदर नाभीत्यादि वर्णन कवित्त ।

पानिप मनोहर कै रंङ्गपाल भनै जल नाभी की सुदेश शुचि प्रगट भँवर है । राजी रोमराजी किधौं लसत सेवार यह देखियत त्रवली की उमगी लहर है ॥ मुक्तामाल आवैं हंस किङ्किनी बजति किधौं कुञ्जहि रथाङ्ग सारस कि रव बर है । लोयन अरहि कैधौं मञ्जन करहिं देव उदर उदार चारु कैधौं मानसर है ॥ ११ ॥

उरस्थल तथा माला वर्णन कवित ।

हरि बच्छस्थल स्वच्छ छीनी छवि मर्कत की उन्नत विशाल श्री सदन सुखमानो है । दुःख गढ़ दलिबे को सिला के समान होत जन द्वार राखिबे कपाट ठाट ठानो है ॥ अरुण असित धूम्र हरित सुपीत चारु मणिगण माल चाहि चित ललचानो है । रंगपाल भनत नवल नील नीरद मै ज्यो दरसत पुरहूत धनु मानो है ॥

मुक्तामाल वर्णन —सवैया ।

कै मणि मर्कत शैल के ऊपर राजित है बर

हंस अथाई । नील पयोधर रंगजूपाल अछन्न कितार कतार रसाई ॥ कै रस नायक पै सुखदायक हांस के जाय परे मचु पाई ॥ श्रीनँदनन्दन के उर कै मुकताहल माल रह्यो छवि छाई ॥

बाँहु बर्णन कवित्त ।

अमल अनूपम मनोहर प्रलम्ब चारु भूषणनि भूषित जु भूरि बल भारे हैं। निरखि भुजंगम समान दुरजन जूह जाहि अनुदिन बसि धीरज न धारे हैं ॥ अखिल भुवन अवकलित ललित अति शोभित अभय ध्वज इव उजियारे हैं। रंगपाल सादर सपदि सुखदायक सबाँहु ब्रजरायक सहायक हमारे हैं ॥ १४ ॥

नखाऽङ्गुली कर बर्णन कवित्त ।

परमप्रभा को धर नख राजि आवै मन तारन बेचारन की उपमा कवन के । रंगपाल आँगुरी उदारता प्रगट हेत दस दिसि दीनन को दारिद दवन के ॥ कोमल ललित शुभ रेखनि बलित एते तिलहूं तुलत दल चम्चला भवन के ।

शंभु बहु बानि श्रुति शास्त्रनि बखानि बानि सब सुखदानि पानि राधिकारवण के ॥ १५ ॥

पुनः आंगुरी वर्णन दोहा ।

ललित आँगुरी कान्ह की कापै बरणी जाय ।
मदनलेखनी के बदन दीनी मसी लगाय ॥१६॥

पृष्टि वर्णन कवित्त ।

दृष्टिही रहति दृष्टि सुखमा सिरिष्टि ऐसी रंगपाल पृष्टि हरि पीतपटवारे की । बर बिमलाई की बिराजित थली की नीकी कान्ह रुचिराई को सुदेस बिसतारे की ॥ मोहन बसीकरण आदिक सुमन्त्र यन्त्र लिखिबे के हेत मैन पट्टिका सुढारे की । मर्कत मलीन पटुता की हद लीन उपमान अदलीन दल कदलीन वारे की ॥ १७ ॥

ग्रीवाँ वर्णन—कवित्त ।

श्रीगोबिन्दजू की सुखमा की सींव गोलग्रीव निरखत नैनन निमेष बिसराई है । बलि रंग-पाल भूरि भूषणनि भूषित सुमनहिं हरति हठि

अमल सोहाई है ॥ निन्दित भये हैं आपि बापुरे कपोत कुल कम्बुहू चपा ते बपु बारि मै दुराई है । ताप की हरणिहारि रेख त्रै ललितसी वसौ मानो तीनहू भुवन की निकाई है ॥ १८ ॥

ठोढ़ी दन्त हाँस वाणी नासिका वर्णन—कवित्त ।

ठोढ़ी नन्दलाल की निरखि सुखमा की आल मालन रसाल फल पीरे ह्वै लरकि गे । दन्तन की राजी ल्यों बिराजी मनोहर शुभ्र हीरा जड़ ह्वैगे देखि दाड़िम दरकि गे ॥ हाँस की बिलास पेखि दामिनी दुरति घन बानी सुनि लाजि व्योम बारिद तरकि गे । रंगपाल भनत ललित चारु नासिका ते हारि मानि कीर कुल कानन सरकि गे ॥ १९ ॥

अधर वर्णन—सवैया ।

अति कोमल राग मई दरसै जपा बिद्रुम बिम्ब कमान दलो । मधुराई न जानिये केती भरी इनमें करता वलि बुद्धिबलो ॥ जेहि के परसे भनि रंगजूपाल कढ़ै बतिया अमृती ते

भली । धनि भाग या बांसुरिया की कही य-
-धारस लेति निशांक चली ॥ २० ॥

दन्त वर्णन कवित्त ।

सुरन की सभा कीधौं शशि मै सुधा के बुन्द जटित जवाहिर की शोभा के सदन मै। कीधौं मुकताहल महावर मै रंगि आछे रंगपाल राखे चारु मुकुर मदन मै ॥ कीधौं बीजुरी के बीज कुन्द की कली है किधौं पक्क दाने दाड़िम के वारि के नदन मै ॥ लच्छण किधौं वतीस कला मुखचन्द के कि राजित रदन ब्रजराज के बदन मै ॥ २१ ॥

हाँस वर्णन—कवित्त ।

कैधौं भासमान भास भासित छटा की छटा चोरी मुखचन्द चारु चन्द की जोन्हैया की । सौरभ की शोभा शुभ्र मोहनी की नीकी मन रंगपाल बिसद विनोद उपजैयाँ की ॥ दीपति की दीपतिं उदीपित अमृत ओप ओपी कार बालिका की गिरा की गोरैया की । ब्रह्म बारि

बीचिका की मंजुल मरीचिका की चित चतु-
रैया मन्द हँसनि कन्हैया की ॥ २२ ॥

रसना वर्णन—कबित्त ।

रस परखनहारी किधौं बारिजात माहिँ सेवत हैं द्विजगण शक्ति सुखसानी की । सुबच प्रसूती दूती कीधौं उर अन्तर की सहचरि चातुरी की सारदा पिकानी की ॥ रंगपाल राग रागिनीन को अमल देश कैधौं है सुबास को तल्प रूप रानी की । मोते एक बानी ते न जात है बखानी आछे रस मे नहानी रसना है दधिदानी की ॥ २३ ॥

बानी वर्णन—दोहा ।

हरिबानी सुनि जलद इव खलगण जरहिं जवास।
दास मयूरन के हिये बाढ़त जात हुलास ॥२४॥

मुखं राग वर्णन—दोहा ।

लाल अधर तांबूल रुचि लखि मन होत निहाल।
रंगपाल परबाल पर कीनो मीनो लाल ॥ २५ ॥

मुख सुबास वर्णन – दोहा ।

मुख सुबास ते माधवी बलि लजात जलजात ।
पारिजात पछतात अरु अतर मुतर परिजात ॥

कपोल वर्णन - सवैया ।

श्रीब्रजचन्द के गोल कपोल अनूपम स्वच्छ अनन्दमई है । कुण्डल मीन मनोहर के ज्यौं सरोवर चारु यों चित्त चई है ॥ दीपति पुञ्ज भरे बिलसे सुखमा तिहुंलोक की लूटि लई है। रंगजूपाल बतावे कहा उपमा सिगरी तो मलीन भई है ॥ २७ ॥

श्रवण वर्णन सवैया ।

गोपुर चन्द के शोभा के भौन जू श्रौन बिलोकि हिये मुद छावै । त्यौं मन मित्र ए रंगजूपाल भला समता पद सीप क्यों पावै ॥ लोलै अमोल भषाकृत कुण्डल या विधि की सुखमा सरसावै । विश्व बिजै करिबै को ललाम निशान है काम मनो फुरकावै ॥ २८ ॥

पुनः कुण्डल वर्णन दोहा।

कुन्तल घटा छटाछटा चटा पटा दुति भान।
सुखमा ताल रसाल भख लालन कुण्डलकान॥

नासिका वर्णन कवित्त।

अखिल भुवन रूप निधि तुंग की तरंग रंगपाल कैधौं दीप दीपति अमन्द को। परमापरम कीधौं मुकुतपुरी सी किधौं कलिका कलित लसी आनँद के कन्द की॥ गुफा है प्रसिद्ध की सुगन्ध स्वास सिद्धिन की सौंव की सुदेस लोल लोचन पसन्द की। तिल सुमनस कीर तुण्ड मद मञ्जन की रञ्जन सुजन मन नासा नँदनन्द की॥ २९॥

नेत्र वर्णन कवित्त।

खञ्जन के भीर मै अधीरता बिलोकियत मीन दीन नीर मै दुराये निज गात हैं। रंगपाल भनै पङ्कजात मुरझात पुनि मृग भ्रुग मानि बन बन बिललात हैं॥ उपमान विरचि बिरञ्चि पचि हारि मानी सुखमा बखानत भूही सौ सकुचात

हैं। मोहन के सोहन नयन जोग जोहन के दू-नैके समान मोहि यहई लखात हैं ॥ ३० ॥

कवित्त।

देखत दृगञ्चल हिमञ्चल सो होत उर चञ्च-लता त्यागहि दृगञ्चल सुधीर के। बरुनी सघन-कारी मंजु रमणीय भाप झिलमिली हार रूप भूपति अमीर के ॥ डोरे रतनारे सील सुघर सजीले चारु रंगपाल भनत हरैया भवभीर के। सुकवि कतारे हेरि लहे न पतारे सम सुखमा भतारे नैन तारे बलबीर के ॥ ३१ ॥

अजब मजा के भरे करन बजा के बस म-दन ध्वजा के मान छीने छबि ऐन हैं। कलित सुसील लोल ललित चकोर चन्द्र भ्रमर अभूत मनटूत चैन दैन हैं ॥ रंगपाल सुघर सजीले चटकीले चारु पैन मैन नेजे ते सहेजे तेजे सैन हैं। जोरदारे चातुरी बटोरदार डोरदार मन के मरोरदार कोरदार नैन हैं ॥ ३२ ॥

सुनत हुतो की लोनो नन्द को ढुटोनो सोतो आजु अवलोक्यो भोर जमुना किनारे मै । बड़ी बड़ी आँखन ते मोतन निहारे नेक ता खन ते भई बलि अजब लचारे मै ॥ येरी मेरी बीर मोहि जानि न परत कछू भनै रंगपाल जऊ कितिक विचारे मै । कैधौं उन नैनन मै नैन ए हमारे बसे कैधौं वेई नैन बसे नैनन हमारे मै॥

भौंह वर्णन—दोहा ।

प्रेम पुटी आनँद कुटी रसपति आसन हेरि ।
सिद्धि बुटी जग छवि लुटी भृकुटी मोहन केरि॥

कवित्त ।

प्रेमही को सासन सरासन मदन को कि आसन श्रिंगार खल त्रासन बुटी की है । रंगपाल भनत सुजन मन रंजन को दीन दुखभंजन की बिधि उपटी की है ॥ यन्त्र अनुराग को सुतन्त्र हाव भाव सिधि छाम ह्वै छपा करै छपा जु छपुटी की है । आनँद चुटी की मन्त्र मूरि प्रजुटी की जग सुखमा लुटी की राधा-पी की भृकुटी की है ॥ ३५ ॥

भाल वर्णन कवित्त।

आनँद के कन्द को अमन्द या केदार कौधौं कुसुम अशोक लोक सुन्दर शृङ्गार को। शोभित सुखद कौधौं भाग की सुभग सभा आँगन अमल कौधौं शोभा के अगार को॥ रंगपाल जन के कुअङ्क के दलनहार कौधौं है भण्डार चारु द्रौपति के सार को। कीरति को शाल कौधौं करन निहाल मन ललित विशाल भाल नन्द के कुमार को॥ ३६॥

सवैया।

भाल बिसाल सउच्च लसै बसी लोकन की जनु सुन्दरताई। जा लखि कै चख चञ्चलहू निज चञ्चलता तजै मैन लजाई॥ को बिन मोल बिकात नहीं इमि केशर की बर रेख सोहाई। रंगजूपाल भनै बिजुरी मनो अर्ध सुधाधर तें मिली आई॥ ३७॥

मुख मण्डल वर्णन—सवैया।

आरसी तो है कठोर महा जलजात सुतो निसि मै सकुचात है। रङ्गजूपाल सुधाधर अ-

ञ्छित त्यौं दिन छीण प्रभा परि जात है ॥ कोमल रैन दिना छवि पूर मनोहरता प्रतिपाद्य विख्यात है । आननहीं हरि आनन को उपमा हरि आनन मोहि लखात है ॥ ३८ ॥

पुनः कवित्त ।

आनँद को कन्द जगबन्दन अवकलित चारु त्यौं मनोहर बदन नँदनन्द को । देखतै बनत पै कहत न बनत जैसो चरचा चलावै कौन मीन ध्वज मन्द को ॥ रंगपाल भनत परमप्रिय शंकर को ध्यावतहीं लेश मिटि जात दुख द्वन्द को । कोमल अमल अविछिन्न परमा को धर वारिये मुकुर अरविन्द अरु चन्द को ॥ *

* मुख कोमल अमल और निरन्तर शोभा जुक्त रहत है और मुख के उपमान मुकुर वो अरबिन्द नाम कमल और चन्द्रमा सो मुकुर कोमल नहीं प्रसिद्ध ही है और अरबिन्द को पङ्कज भी नाम है पङ्क ते भयो याने मलीनता व्यंजित भई पुनः भ्रमर के चरणते मर्दित है अतएव अमल नहीं चन्द्रमा घटत बढ़त रहत है दिन में छवि छीन रहत याते उपमान वारे हैं ॥ इत्यर्थः ॥

कन्दरपदरपविभञ्जन सहज मन होत लोट ग्रोट पेखि पीतपटधारे को। रंगपाल कुण्डल को हलक कपोल गोल ग्रलक भलक देखि पलकन पारे को॥ वह बंक भौंहैं वह हेरन कनाखिन की वह बानि मुसुकान ललित बिसारे को। ग्रानन के उपमा को ग्रानन को चाहै तौ व ग्रान न मिलैगो चतुरानन बिचारे को॥४०॥

केश वर्णन कवित्त।

कोमल परम हृषीकेश के सुबेश केश सघन सचिक्कन सनेह चिलकारे हैं। रंगपाल ग्रमल सुभायही ते शौरभित काकही सँवारे चित चौंधत निहारे हैं। शोभियत चल हेम कुण्डल समीप चारु मनहिं हरत ग्रतिकारे घुंघरारे हैं। काकपच्छ तम के पसार ग्रलि के कतार मखतूल तार वो सृङ्गार सार वारे हैं॥ ४१॥

ग्रजब गठीली लोचदार चटकीली त्यों कटीली सम सीली नेह सौरभ ग्रमेजे मे। ग्रति सघनीली मनमोहनी रसीली कारी ग्रमल सँ-

वारी बाल काकडी मजेजे मै ॥ रंगपाल मधुप कतार वो सङ्गार सार मखतूल तार ते अनूपम सहेजे मैं । परमा बटोरवारी वह चितचोरवारी जुलुफ मरोरवारी लोटति करेजे मै ॥ ४२ ॥

मुकुट वर्णन सवैया ।

हेरतहीं मन होत लटू चटकीलो किरीट झुकोहैं दिये हैं । रंगजूपाल त्यों मुक्तमणी गण मण्डित मञ्जु प्रभानि लिये हैं ॥ राजित चारु सिखी पख चन्द्रिका यों सुखमा अरी आनि हिये हैं । ज्यों अकसे शशिशेषर को हरिशेषर चन्द अनेक किये हैं ॥ ४३ ॥

मुकटादि की शोभा वर्णन कवित्त ।

कोटि मनमथ मानहारी छवि रंगपाल जीवन सफल करि हेरि ब्रजनाथही । मन्दमुसकान जुत आनन अमल ओप काशमीर कलित तिलक रूरो माथही ॥ घुंघरारे कारे केश मुकुट मयूरपच्छ नाना रंग मणिगण शुभ गुण गाथही । देखियत मानो चारु चन्द पर चपा-छटा घन-घटा पटल सुरेस धनु साथही ॥ ४४ ॥

अङ्गदीप्ति वर्णन सवैया।

श्रीघनश्याम की अंगप्रभा लखि नील सरोरुह की दुति लाजै। रङ्ग कहा अतसी कर पुष्प त्यों सौंह तमाल क्यों धीरता साजै॥ मर्कतहू नहिं शोभ लहै कछु कैसी अपूरबई छवि छाजै। जा मन मैं बसै रंगजूपाल सो उज्जल होत मलीनता भाजै॥ ४५॥

पीतपट वर्णन—कवित्त।

आनँद अगार सुकुमार नन्द के कुमार मार बलिहार जिन पर बेशुमार हैं। रंगपाल जानै जिन देखी आँखैं वह छबि वरणि सकै न अपि आननहजार हैं॥ अंग साँवरे यों लसै रेशमी दुकूल पीत मुक्तनि वलित छोर बूटे जरीदार हैं। सार दामिनी को खैंचि सुन्दर शृङ्गार पर तार के कतार जुत राखी करतार है॥ ४६॥

झगा वर्णन—कवित्त*।

मुकुट लटक चारु आनन अपार ओप रंगपाल पूनो इन्दु जनो दरसानो है। नासिका

सुकीर मंजु अधर अरुण फल पहुंचत नाहीं चा-
हि चित ललचानो है ॥ त्योंही पीत रेशमी न-
वल झीने झगा माहि देह दीप्ति दिपति सुमन
अनुमानो हैं। कुङ्कुमाभसुमणि सुतन्त्र कृत यन्त्र
तामै झलकै अनूप इन्द्र नीलमणि मानो है ॥

सर्वाङ्ग वर्णन – दोहा।

हरि अँग २ सुखमा सुखद क्योंहू मन न अघात
डरत नहीं पुनरुक्ति को फिरि २ बरणत जात॥

कवित्त।

अंघ्रि अरविन्द वारौं ठवनि मृगेन्द्र वारौं
जानु मणि थम्भ वारौं चञ्चला निचोल पै। उदर
पै चलदल दल रम्भ पृष्टि पर बाहुं करि कर
वारौं कम्बु ग्रीव गोल पै॥ चिबुक रसाल पै र-
साल वारौं रंगपाल अधर प्रबाल वारौं आरसी
कपोल पै ॥ हास हंस कर वारौं रदनालि पर
वारौं माणिक अमोल त्यो पियूष मृदु बोल पै॥

पायन पै अरबिन्द लङ्क पर मृग इन्दु नील
इन्द्रमणि देह दीपति अमन्द पै। पल्लव सुपाणि

पै भुजा पै गज सुण्डादण्ड उर छवि आल लाख वानि सुखकन्द पै ॥ आरसी कपोल पर मृग दृग लोल पर रंगपाल भौंर भीर जुलफन फन्द पै । भौंहन कि सान पै कमान मनमथवारौं कोटि २ चन्द ब्रजचन्द मुखचन्द पै ॥ ५० ॥

नखन पै नखत तरुण कञ्ज पायन पै रम्भ खम्भ जानु पै मृगेन्द्र लोनी लङ्क पै । उदर पै पान कण्ठ पै कपोत रंगपाल चिबुक रसाल छटा दन्तन दमङ्क पै ॥ वानि बिम्ब मुकुर कपोलन पै नासा कीर नैनन पै खञ्जन कमान भौंह बङ्क पै । भाल पै मयङ्क भाग कोटि मारतण्ड वारौं मुकुट झवानि झलाझल की झमङ्क पै ॥ ५१ ॥

अरुण सुवृत्त गुलफन पै कोटर वारौं नख नखतालि कञ्जदल पगतल पै । कटि मृगराज गजराज सुण्ड बाहु पर कदली कदल पृष्टि चारुता की थुल पै । मुख द्विजराज द्विजराजि कुन्दकली वारौं अखिल सुगन्धन सहज परिमल पै ।

रंगपाल कैसे एक बानी. ते बखाने बारे उपमा सकल अंग सुखमा सकल पैं ॥ ५२ ॥

पायं छबि भारे लखि कञ्ज मनमारे नख-बर कहँ तारे कटि लखि सिंह हारे हैं । कर सुकुमारे भुज साँच कैसे ढारे अहि छबि दलि डारे ग्रीव गुञ्जमाल धारे हैं. ॥ बानि अरुणारे दन्त कुन्दकलिकारे त्यों कपोल दीप्ति कारे पर चिन्तामणि वारे हैं । कच अति कारे रंगपाल घुंघरारे वह मोरपच्छवारे सो हमारे रखवारे हैं॥

उर नन्दलालजू के मोतीमाल रंगपाल ग-गन मगन की सुनखत विभात है । साँवरे स-लोने गात पीतपट पर्यो जनु नीलमणि शैल पर आतप प्रभात है ॥ सुखमा को आल भाल के-शर तिलक तापै अर्धचन्द पै ज्यों सुरगुरु दरसात है । मकर प्रमाण चारु कुण्डल लसत कान मानो प्रद्युवान के निशान फहरात हैं ॥५४॥

पीरी पाय पानहियां पीरोई भगा सुभौनो काशमीरी कलित पिछौरी जरतारी की । सान

भरी भौंहैं वह हेरन अनोखी तैसी कुण्डल स-मीप छबि जुल्फ घुंघरारी की ॥ मोरपङ्क जुत मणि मुकुट मयूष फैली रंगपाल छीनी आभा चन्द्रमा तमारी की । कञ्चन लकुट टेकि खड़े मुसकात मन्द बसी मन मेरे ऐसी सुखमा बि-हारी की ॥ ५५ ॥

सवैया ।

पायन पैंरियै पावरिया कर बाँसुरिया मन आनँदकारी । केशरिया सुभगो दुपटो ज़री को-रन छोरन मुक्त पत्यारी ॥ रत्न किरीट शिखी-पख मण्डित त्यों जुलफै बलि घूंघरवारी । रंग-जूपाल हिये निवसो यहि बानक सो नित बाँके बिहारी ॥ ५६ ॥

कवित्त ।

अमित तरणि तेज नागर उजागर त्यों धी-रज के सागर मनोहर स्वछन्द हैं। परम अद्वन्द नित्य पूरण सुसीलधाम कोटि कोटि काम छबि आनँद के कन्द हैं ॥ बन्दनीयवर त्रयलोक को

अचल टीप खल-तरु तोरिबे को प्रबल गयन्द हैं। धवल धरमधुर धारन अनूप चारु रङ्गपाल जू को कल्पतरु ब्रजचन्द हैं ॥ ५७ ॥

बाँसुरी बजावन समै की शोभा वर्णन—कवित्त।

आँगुरी जु चलित ललित बंसी बेह पर रंगपाल माल बर गर मै लसो रहै। पट फहरान त्यों लखनि दृगकोरन की उन्नत भृकुटि मञ्जु धनु सी कसी रहै॥ कच कुटिलौहैं परे ललित कपोल लखि मुकुट झुकोहैं चपा मैनकी गसी रहै। संगी ग्वालबाल आसपास मै सुढंगी वह मूरति त्रिभंगी मेरे मन मे बसी रहै ॥ ५८ ॥

आई देखि गोइयां आजु तरणितनैया तीर बाँसुरी बजावन वा नागर सुनट को। ग्रीवा की झुकन त्यों कपोलन पै रंगपाल चटकीली अलक मरोरवारी लट को॥ आँगुरी को फेरन वो हेरन कनाखिन को चुभि रही चित्त भौंह-कोरन की मटकी। पटफहरान कानकुण्डल को थहरान छहरान छवि मंजु मोर के मुकुट को॥

यश वर्णन॰कवित्त।

कीन्हों शेष देहँ दुति छमा पट नृपछत्र रंग-
पाले भनत तरंग गंगधार है। चन्द्र कर नारद
सुमन गणपतिदन्त शौनकादि शिखा काम ध-
नुष उदार है॥ विष्णु शङ्ख आसन स्वयम्भु सु-
तिलक शम्भु नाक मोती रमा सारदा श्रीउमा-
हार है। राधिकारमण अखिलेश्वर सुखद चारु
रावरो सुयश सब जग को शृङ्गार है॥ ६० ॥

बंसी कहुं डारे पीतपट न सँभारे धाये पौन
हियहारे यौं परीच्छितै उबारे हैं। गिर नखधारे
ब्रजजन दुख टारे गर्ब बासव को गारे बहु दु-
ष्टनि संघारे हैं॥ गजहि उधारे द्विजदारिदवि-
दारे रंगपाल दीन प्यारे बेद बिरद उचारे हैं।
अधमनि तारे जेते नाहि नभ तारे वह मोर-
पखवारे सो हमारे रखवारे हैं॥ ६१ ॥

इति श्री रविवंशोद्भवश्रीमान्‌विश्वेश्वरवैकणपालवर्मात्मज
रङ्गनारायणपालकृतेऽङ्गादर्शे श्रीकृष्णचन्द्रप्रत्यङ्गवर्णनो नाम
द्वितीयः प्रकाशः॥ २ ॥

अथ युगलकिंशोर बर्णन ।

कबित्त ।

उन्नत महल चन्द्रमणि मे विचित्र चित्र तोरण कलश त्यों पताके ध्वज फहरैं । देबिन समेत बासवादि देव सेवैं पद छरीदार खरे केते श्राम पास ठहरैं ॥ केते गति भावै दरसावै गावै वाद्यधुनि रंगपाल भनै भावैं छावैं सौंध लहरैं । बैठे हरि राधे दुति बासन सिंघासन पै मुसकात सुमुख छटानि छूटि छहरैं ॥ १ ॥

पावस नवल नील नीरद सजल शुचि बलित प्रकाश कृत लज्जित विचारे हैं । तरणितनैया तीर तरुण तमाल जुत जातरूप बेलीहू मलीन निरधारे हैं ॥ इन्द्र नीलमणि यूप अमल सुढार चारु कुंकुमाभमणि पाँति जटित बिसारे हैं । कोटि २ दर्पक सदार छवि औ श्रिंगार रंगपाल युगलकिशोर पर वारे हैं ॥ २ ॥

दोहा ।

दरसाइय छबि स्यामघन संग चञ्चलाधारि ।
मोर हियो सीतल करिय हाहा झरि बर बारि॥

कवित्त ।

अंग छबि दामिनी निरद चन्द्र दर्पणास्य मुसकान दुति चहुंधावैं सौंध लहरैं । जटित जराय टीको केशर तिलक भाल सीस सीसफूल त्यों मयूर पच्च छहरैं ॥ मंजु कञ्ज कर कञ्ज बाँ-सुरी बलित बेश नील पीत बसन जरी के छोर फहरैं । रंगपाल भनै कोटि २ रति काम वारे ऐसे राधा माधव हमारे हिये ठहरैं ॥ ४ ॥

दोहा ।

राधा माधव एक वपु नित्य सच्चिदानन्द ।
करत जक्त बहु भक्तहित लीलाललित स्वछन्द ॥
अँग२ प्रति छबिनिधि अगम शेष न पावैं पार
रंगपाल वर्णन कस्यो कछु निजमति अनुसार *

* तिलक—रंगपाल कविनाम अपनी मति अनुसार कछु वर्णन कस्यो औ अंग २ की तो छबि अगम शेषहू नहीं पार पाय सकते फिर मेरी क्या गिनती है ।

सुनहिं सुनावहिं ध्यावहीं श्रीहरिगुण यश रूप ।
शास्त्र पुराण रु वेदमत ते न परहिं भवकूप ॥८॥
कहत सुनत लेखत गुनत निसिदिन चित्तपवित्र
नखसिख राधाकृष्ण को सुखप्रद नित्य सुमित्र
जद्यपि मै ढीठो करी तद्यपि यह गुनि मोद ।
बालवदी बिसराय कै लेंहि मातु पितु गोद॥९॥
बन्दत हौं बहु वार पद सज्जन सरल सुभाय ।
जे भूषण प्रगटहिं रुचिर दूषण दूरि दुराय॥१०॥
तो कबिताहु सरस गुनि जौं आदरैं सुजान ।
नातरु सब विधि ते सुखद राधा माधव ध्यान॥
मोहन मूरति स्याम की निवसी जेहि उर नाहि
ते नर खर सूकर सरिस बृथा जिवहि जगमाँहि ॥

कवित्त ।

तारे हैं परिन्दै त्यों उबारे हैं गयन्दै जासु कीरति बुलन्दै दुष्टगण के निकन्दै रे । प्रेमही पसन्दै यश गावै देवब्रन्दै अरुहारी दुखद्वन्दै पं-गदीपति अमन्दै रे ॥ रंगपाल छन्दै छल भू को जानि गन्दै मुनि मानस मलिन्दै पाय पङ्कज

मरन्दै रे । येरे मन मुन्दै सब छाड़ि फरफन्दै वह आनँद के कन्दै ब्रजचन्दै क्यौं न बन्दै रे ॥

अम्बरओढ़ैया पीत रास को करैया बर बंसी को बजैया सदा माखन चखैया है । दुःख को हरैया दधिदान को लिवैया कालीनाग को नथैया जन मन हरखैया है ॥ कंश को मरैया चारि फल को देवैया रंगपाल बल भैया कृपाकोर को लखैया है । ब्रज को बसैया मोरपच्छ को धरैया वह नन्द को कन्हैया मेरी लाज को रखैया है ॥

दोहा ।

कविबुधजन सो विनय यह बालक मोहि विचारि
चूक परी जो होय बलि सो दीजियो सुधारि ॥

इति श्री रविवंशोद्भव श्रीमान् विश्वेश्वरबक्शपालवर्मात्मज रंगनारायणपालकृतेऽङ्गादर्शे श्रीयुगुलकिशोरप्रत्याङ्गवर्णनं नाम तृतीयः प्रकाशः । समाप्तोयमङ्गादर्शः ।

विनोदाष्टक—कवित्त ।

होरी के दिवस बरसाने की नवेली वह मोहि मिली औचक परी सी परखोरी मै । सो करति बहु बार भारन लचति लङ्क निरखि अजब छटा

आनद लही री मै ॥ बसन सुरङ्ग मुखमण्डित गुलाब बर मंजु मुसकान छटा छलक छकोरी मै । रंगपाल भनै मानो छूटि छन छटा छबि छहरै अरुण भोर भभक भँभोरी मै ॥ १ ॥

नूरभरी जोबन-गरूर रूर छूर ऐसी घेरे अलि सहज सुगन्ध सरसाई ते । कम्प्राजुत सम्पा भई चम्पा छबि झम्पा लगै कनक बनक मन्द तनक गोराई ते ॥ कासमीरी कंचुकी कसत फँसी बङ्क लट बाहिरे करन लागी मोद अधिकाई ते ॥ रंगपाल मानो मुखचन्द के पियूष हेत कढ़ी जाति पन्नगी सुमेर की तराई ते ॥ २ ॥

सरबती सारी जगमग जरतारीदार मनी-कनी बनी छहरनि छबि छोरे की । रंगपाल खीनी लङ्क अजब अदा ते भरी मुरकि चलन सिसकन चितचोरे की । जादूभरी भौहैं खूब खूबी लबरेजे नैन हेरन मजेजे हिय हरष हलोरे की ॥ बैन रस बोरे दई सुगँध झकोरे बह भू-लति न भोरे मुसकान मुखगोरे की ॥ ३ ॥

राती कंचुकी सोहाती सारी जरतारी भारी दून गलियन कोकनद सी कुरै गई। रंगपाल किङ्किनीकलित लचकीली लङ्क नूपुर भनक मैन दुन्दुभि सी दै गई॥ लाजनि अमेजे नैन मुरकि मजेजे हेरि तेजे काम नेजहू की रूरता रितै गई। मुख चैक छटा छूटि छहराति छोनी छबि छाजति छपाकर सी छाती छेद कै गई॥

बन्दनबलित भाल चन्द सो अमन्द मुख चन्दन दुचन्द फन्द मन्द मुसक्यान ते। हेरन मजेजे बाण तेजे सान के जे धरे मदन कमान दीन भौंहन की सान ते॥ रंगपाल चरन करन अधरन चारु लालिमा कमल नवदल भोर भान ते। जोबन जलूस रूर जोहर जहूर नूर हूर आई उतरि जरूर आसमान ते॥ ५॥

आइ हुती हूर आसमान ते जरूर वह आनन समान उपमान उपरेजे को। रंगपाल जोबन जलूस जोति जागी अंग चारु मन्दहास फन्द फासिनि करेजे को॥ चुभ्यो चित बलित गरेजे

कुच बीच हेरि हलका हरेजे गजगौहर लरेजे को।
निरखि मजेजे कछु बतरि सतरि भौंह चतरि
सखी मो गई कतरि करेजे को ॥ ६ ॥

लफति सटा सी अटा परट पटा पै बाल रंग-
पाल सखिन हरे जे बतरति है। कस नई आँगी
बीच परेजे लरेजे मुक्त सुखम' सहेजे कौन सौहैं
न तरति है ॥ छटा ते सवाई छाई गहब गोराई
अंग पायन ते कंज की ललाई ललरति है।
मन्द हँसि मुरकि तिरीछे ताकि ताकि सजे सारी
काफरेजा सो करेजा कतरति है ॥ ७ ॥

सरबती सारी हरी मोतिन किनारीदार रंग-
पाल गहिरी गोराई अंग सोने सी। चारुता की
बेली सुकुमारता की मूरति सी बिरची बिरंचि
काम लंक अनहोने सी ॥ ठोरवारी आँखन की
कोर ते बिलोकि मुरि मन्दमुसकान भरे दामिनी
परोने सी। बलित ढिठोने अहि छोने सी अलक
परी वह लोने मुख की लगायगई टोने सी ॥